शिक्षा और सीख (शेष)

घड़ी की दिशा में: सुबह-सुबह योग, मिट्टी के बर्तन बनाना, बाहर खोज-बीन और खेती का काम, इमली-महुआ स्कूल, गाँव बलेंगापारा, कोंडागांव, छत्तीसगढ़।

"हममें से बहुत कम लोग ही स्कूल में पढ़ने-लिखने, गणित या विज्ञान सीखने आते हैं। हम यहाँ पर साहस भरी कहानियां सुनने और दूर-देशों की किताबें पढ़ने आते हैं, मिट्टी और बालू से खेलने, लम्बी चारदीवारी पर सैर करने, चित्रकारी और खेलने, पिकनिक मनाने, गीत-गाने और अपने मित्रों के साथ बतियानें आते हैं। हरेक बच्चा स्कूल में खेलता है और केवल वो चीज़ें करता है जिसमें उसे मज़ा आता है। स्कूल बच्चों के व्यक्तित्व का आदर करता है।" - इमली-महुआ स्कूल के बच्चे। यह ग्रामीण स्कूल छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्र में स्थित है। स्कूल, बच्चों के हाथों में खुद की पढाई की ज़िम्मेदारी सौंपता है। स्कूल में स्वतंत्र सोच का माहौल है। क्या सीखना है? यह बच्चे खुद तय करते हैं और बड़ों की मदद से वो उसे संपन्न करते हैं।

दूसरी ओर तिरुवन्नामलई, तमिलनाडु स्थित, मरुदम फार्म स्कूल में नियमित कक्षाएं लगती हैं। पर इस ढांचे में भी बच्चों को यह आज़ादी है कि वह क्रियात्मक ढंग से कला, क्राफ्ट, नाटक और बाहरी गतिविधियों को प्रोजेक्टस और अनुभव करके सीख सकें। स्कूल विभिन्न पृष्ठभूमियों के शिक्षकों और बच्चों को, एक-साथ एक "सम्मिलित" मॉडल में लाने की चेष्ठा करता है।

घड़ी की दिशा में: मरुदम फार्म स्कूल में बच्चे व्यक्तिगत सीख के साथ-साथ, सिलाई-कढ़ाई, अपने परिवेश की खोजबीन, फिल्म बनाने और संगीत जैसी सामूहिक गतिविधियों को भी आसानी से कर पाते हैं।